कबीर के काव्य में भक्तिभावना : एक विश्लेषण

नविन्द्रा बाई

भारतीय भूमि पर भक्ति की अविरल धारा युगों–युगों से बहती आ रही है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में भक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है क्योंकि हिन्दी साहित्य के एक युग का नाम ही भक्तियुग या भक्तिकाल है। कबीरदास भक्तिकाल की निर्गुण ज्ञानमार्गी संतपरम्परा के प्रतिनिधि कवि हैं । भक्ति के माध्यम से कबीर ने वर्ग व जातिगत विभेद को दूर किया है तथा विश्वव्यापी प्रेम से विश्वधर्म की स्थापना भी की है । कबीर की भक्ति में सभी मनुष्यों के लिए समानता की भावना है। उनकी भक्ति परम्परा में किसी भी बाह्यचार या धार्मिक कर्मकांड को स्थान नहीं दिया गया है। उनकी भक्ति ईश्वर के दरबार में सभी की समानता और एकता की पक्षधर है। कबीर ने ज्ञान व प्रेम के द्वारा निर्गुण भक्ति को चरम परिणति तक पहुँचाया हे। कबीर की भक्ति सहज साधना पर आधारित है जिसमें लौकिक जगत को एकाकार कर लेने की अद्‌भुत क्षमता है ।